

रविवार 25 अक्टूबर, 2026

विषय — मृत्यु के बाद की प्रक्रिया

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 15: 26

"सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है।"

उत्तरदायी अध्ययन: प्रकाशित वाक्य 22: 1-3, 8, 9, 14

- ¹ फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकल कर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी।
- ² और नदी के इस पार; और उस पार, जीवन का पेड़ था: उस में बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस पेड़ के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।
- ³ और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे।
- ⁸ मैं वही यूहन्ना हूँ, जो ये बातें सुनता, और देखता था; और जब मैं ने सुना, और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, मैं उसके पांवों पर दण्डवत करने के लिये गिर पड़ा।
- ⁹ और उस ने मुझ से कहा, ... परमेश्वर ही को दण्डवत कर॥
- ¹⁴ धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 139: 23, 24

- ²³ हे ईश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले!
- ²⁴ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!

2. रोमियो 6: 16-18, 22, 23

- ¹⁶ क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है।
- ¹⁷ परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।

- 18 और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।
22 क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।
23 क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

3. लूका 4: 1 (से 1st ,)

- 1 फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ, यरदन से लैटा;

4. लूका 7: 11-16

- 11 थोड़े दिन के बाद वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
12 जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे।
13 उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो।
14 तब उस ने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठाने वाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
15 तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां को सौंप दिया।
16 इस से सब पर भय छा गया; और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है।

5. यूहन्ना 4: 16 (से यह वाणी)

- 16 यीशु कहते हैं...

6. यूहन्ना 5: 24, 25, 28, 29 (से 1st ;), 30

- 24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
29 जिन्होंने ने भलाई की है वे जीवन के
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।

7. यूहन्ना 17: 1-3, 6, 9, 20, 21

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
- 2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
- 3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।
- 6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है।
- 9 मैं उन के लिये बिनती करता हूं, संसार के लिये बिनती नहीं करता हूं परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।
- 20 मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
- 21 जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।

8. रोमियो 8: 28, 31, 38, 39

- 28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।
- 31 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
- 38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
- 39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

9. प्रकाशित वाक्य 1: 1

- 1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।

10. प्रकाशित वाक्य 21: 1, 3, 4, 6, 7

- 1 फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।
- 3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।
- 4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

- ⁶ फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूँ: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंटमेंत पिलाऊंगा।
- ⁷ जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 246: 27 (ज़िंदगी)-31

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

2. 259: 6 (मैं)-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

3. 550: 5-14

ईश्वर ही जीवन या बुद्धि है, जो जानवरों के साथ-साथ पुरुषों की व्यक्तित्व और पहचान को बनाता और संरक्षित करता है। भगवान परिमित नहीं हो सकता है, और भौतिक सीमा के भीतर सीमित हो सकता है। आत्मा न तो पदार्थ बन सकता है, न ही आत्मा इसके विपरीत विकसित हो सकती है। इस बात की जाँच करने के लिए कि भौतिक जीवन, जो समाप्त होता है, यहाँ तक कि जैसे ही यह शुरू होता है, यह सब कुछ क्या है? होने का वास्तविक अर्थ और इसकी शाश्वत पूर्णता अब दिखाई देनी चाहिए, भले ही यह उसके बाद भी हो।

4. 91: 5-8

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

5. 290: 3-10, 16-27

अगर इंसान के होने का प्रिंसिपल, नियम और सबूत, मौत के आने से पहले ज़रा भी नहीं समझा जाता, तो वे उस एक अनुभव की वजह से ज़िंदगी के पैमाने पर स्पिरिचुअली ऊपर नहीं उठेंगे, बल्कि बदलाव से पहले की तरह ही मैटीरियल बने रहेंगे, और ज़िंदगी के स्पिरिचुअल मतलब के बजाय मैटीरियल तरीके से और मतलबी और घटिया इरादों से खुशी ढूँढते रहेंगे।

अगर मौत नाम के बदलाव ने पाप, बीमारी और मौत में यकीन खत्म कर दिया होता, तो खुशी खत्म होने के पल में मिल जाती, और हमेशा के लिए पक्की हो जाती; लेकिन ऐसा नहीं है। परफेक्शन सिर्फ परफेक्शन से ही मिलता है। जो लोग गलत हैं, वे तब तक गलत ही रहेंगे, जब तक कि डिवाइन साइंस में क्राइस्ट, यानी सच, सारी नासमझी और पाप को खत्म नहीं कर देते।

वह पाप और त्रुटि जो हमें मृत्यु के तुरंत बाद प्राप्त होती है, उस क्षण में समाप्त नहीं होती है, लेकिन इन त्रुटियों की मृत्यु तक होती है। पूर्ण आध्यात्मिक होने के लिए, मनुष्य को पाप रहित होना चाहिए, और वह पूर्णता तक पहुँचने पर ही इस प्रकार बनता है।

6. 291: 12-25 (से 1st.)

सार्वभौमिक मुक्ति प्रगति और परिवीक्षा पर टिकी हुई है, और उनके बिना अप्राप्य है। स्वर्ग एक स्थानीयता नहीं है, बल्कि मन की एक दिव्य स्थिति है जिसमें मन की सभी अभिव्यक्तियाँ सामंजस्यपूर्ण और अमर हैं, क्योंकि पाप नहीं है और मनुष्य अपने स्वयं के धार्मिकता नहीं पा रहा है, लेकिन "प्रभु के मन", "जैसा कि शास्त्र कहत।

"वृक्ष चाहे दक्खिन की ओर गिरे या उत्तर की ओर, तौभी जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा।" ऐसा हम सभोपदेशक में पढ़ते हैं। इस पाठ को लोकप्रिय कहावत में बदल दिया गया है, "जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।" जैसे मनुष्य सोता है, वैसे ही वह जागता है। जैसे मृत्यु नश्वर मनुष्य को पाती है, वैसे ही वह मृत्यु के बाद भी रहेगा, जब तक कि परिक्षण और विकास आवश्यक परिवर्तन को प्रभावित नहीं कर देते।

7. 426: 16-32

जब यह जान लिया जाता है कि बीमारी जीवन को नष्ट नहीं कर सकती है, और मृत्यु से पाप या बीमारी से मृत्यु को बचाया नहीं जाता है, तो यह समझ जीवन के नएपन में तब्दील हो जाएगी। यह या तो मरने या कब्र से डरने की इच्छा में महारत हासिल करेगा, और इस तरह नश्वर अस्तित्व को नष्ट करने वाले महान भय को नष्ट कर देगा।

मृत्यु में सभी विश्वासों का त्याग और इसके डंक के डर से स्वास्थ्य और नैतिकता के स्तर को अपने वर्तमान उत्थान से बहुत ऊपर उठाया जा सकता है, और हमें ईश्वर में जीवन के प्रति असीम विश्वास के साथ ईसाई धर्म के बैनर को धारण करने में सक्षम करेगा। पाप मौत लाया, और पाप के गायब होने के साथ मौत गायब हो जाएगी। मनुष्य अमर है, और शरीर मर नहीं सकता, क्योंकि पदार्थ के पास समर्पण करने के लिए कोई जीवन नहीं है। पदार्थ, मृत्यु, बीमारी, बीमारी और पाप नाम की मानवीय अवधारणाएँ सभी नष्ट की जा सकती हैं।

8. 427: 5-25, 29-14

मनुष्य की आत्मा न तो मर सकती है और न ही बेहोशी में गायब हो सकती है, क्योंकि आत्मा अमर है। यदि मनुष्य अभी मृत्यु में विश्वास करता है, तो उसे यह जानकर अविश्वास करना चाहिए कि मृत्यु में कोई वास्तविकता नहीं है, क्योंकि होने का सत्य अमर है। यह विश्वास कि अस्तित्व अस्तित्व में है, जीवन को समझने और सामंजस्य प्राप्त करने से पहले विज्ञान से मिलना और उसमें महारत हासिल करना चाहिए।

मृत्यु, लेकिन सपने का एक और चरण है कि अस्तित्व भौतिक हो सकता है। विज्ञान में मनुष्य के अस्तित्व के सामंजस्य में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है और न ही समाप्त कर सकता है। आदमी बाद में वैसा ही है जैसा

हड्डी टूटने या सिर कटने से पहले होता है। यदि मनुष्य को कभी भी मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं करनी है, तो शास्त्र क्यों कहते हैं, "सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है"? वचन की अवधि दर्शाती है कि हम पाप पर विजय पाने के अनुपात में मृत्यु पर विजय प्राप्त करेंगे। सबसे बड़ी कठिनाई इस अज्ञान में है कि ईश्वर क्या है। ईश्वर, जीवन, सत्य और प्रेम मनुष्य को अमर बनाते हैं। सभी को नियंत्रित करने वाले अमर मन को भौतिक क्षेत्र, तथाकथित, साथ ही आध्यात्मिक में सर्वोच्च के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

मौत के सपने को मन को यहीं या बाद में काबू करना होगा। सोच अपनी मैटेरियल घोषणा, "मैं मर गया हूँ," से जागेगी, ताकि सच के इस तुरही-शब्द को पकड़ सके, "कोई मौत नहीं है, कोई इनएक्शन नहीं है, बीमार एक्शन नहीं है, ओवरएक्शन नहीं है, न ही रिएक्शन है।"

ज़िंदगी असली है, और मौत एक भ्रम है। जीसस के तरीके से आत्मा के फैक्ट्स का एक डेमोंस्ट्रेशन मैटेरियल सेंस के अंधेरे विज्ञान को तालमेल और अमरता में बदल देता है। इस सबसे बड़े पल में इंसान का प्रिविलेज हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "अगर कोई इंसान मेरी बात मानेगा, तो वह कभी मौत नहीं देखेगा।" झूठे भरोसे और भौतिक सबूतों के बारे में सोचना बंद कर देना ताकि होने की आध्यात्मिक सच्चाई सामने आ सके,—यही वह बड़ी कामयाबी है जिससे हम झूठ को दूर भगा देंगे और सच को जगह देंगे। इस तरह हम सच में मंदिर या शरीर बना सकते हैं, "जिसे बनाने वाला और बनाने वाला भगवान है।"

दैनिक कर्तव्यों

मेरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6